IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सहरिया जनजाति विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

नितिन कुमार सतभैया
शोधार्थी
आजीवन शिक्षा प्रसार और समाज कार्य अध्ययन शाला जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर
डॉ शालिनी पांडेय
प्राचार्या उदय एजुकेशनल कॉलेज
भिंड मध्य प्रदेश

शोध सार

ग्वालियर जिले के मध्य प्रदेश शासन द्वारा मान्यता प्राप्त प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालयों में से तीन तहसीलों जो कि सहरिया जनजाति बाहुल्य हैं अर्थात घाटीगाँव, डबरा एवं भीतरवार तहसील के 20 प्राथमिक विद्यालयों और 20 माध्यमिक विद्यालयों को **उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन विधि** से प्रतिदर्श के रूप में चयनित कर कुल 600 प्रतिदर्श में दोनों, प्राथमिक और माध्यमिक स्तर के क्रमशः 150 बालक विद्यार्थी और 150 बालिका विद्यार्थी लिए गए। प्रतिदर्श के चयन के पश्चात उनकी शैक्षिक उपलब्धि के लिए पिछली कक्षा के वार्षिक परीक्षा में प्राप्त अंकों का संग्रहण किया गया और पारिवारिक वातावरण की जाँच हेतु चयनित विद्यार्थियों के अभिभावकों से **रीना शर्मा** एवं **विभा निगम** द्वारा निर्मित **गृह वातावरण मापनी** को भरवाया गया। शोध अध्ययन में आँकड़ों का संग्रहण करने के पश्चात् शोधकर्ता द्वारा आँकड़ों का विश्लेषण किया गया। इस शोध अध्ययन में प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण मात्रात्मक रूप से किया गया। मात्रात्मक आँकड़ों का विश्लेषण आधुनिकतम सांख्यिकीय विश्लेषण प्रणाली˝ˆ (वर्जन २०) द्वारा वन **वे एनोवा टेस्ट** विश्लेषण विधि के माध्यम से किया गया। परिणामों के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि सहरिया जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पारिवारिक वातावरण में प्रधान आयाम तथा पारिवारिक वातावरण के स्तर का प्रभाव पड़ता है। **अतः निर्मित परिकल्पना " सहरिया जनजाति विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नही पड़ता" पूर्णतः अस्वीकृत सिद्ध होती है, और वैकल्पिक परिकल्पना "सहरिया जनजाति विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है" स्वीकृत की जाती है।** अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सहरिया विद्यार्थियों का उच्च पारिवारिक वातावरण उच्च शैक्षिक उपलब्धि, औसत पारिवारिक वातावरण औसत शैक्षिक उपलब्धि तथा निम्न पारिवारिक वातावरण निम्न शैक्षिक उपलब्धि की ओर ले जाता है।

प्रस्तावना

सहरिया शब्द की उत्पत्ति के आधार पर सहरिया का अर्थ शेर से सहचर के रूप में किया जा सकता है। सह का अर्थ होता है साथी और हरिया का अर्थ होता है शेर अर्थात शेर का साथी सहरिया। सहरिया शब्द की उत्पत्ति का सम्बंध पारसी एवं अरबी भाषा के सहर शब्द से भी जोड़ा जा सकता है जिसका अर्थ जंगल होता है जंगल में रहने के कारण ये सहरिया कहलाये। एक अन्य विवरण के अनुसार सहरिया सौरी (शबरी रामायण कालीन) के वंशज हैं। सौरी से उत्पन्न होने के कारण उन्हें शबर, सवर, सौर और सहरिया कहा गया।

मध्यप्रदेश की सहरिया जाति को अनुसूचित जनजाति का दर्जा 1956 में दिया गया है। यह जनजाति मध्य प्रदेश के पश्चिमोत्तर एवं पश्चिमी मध्य क्षेत्र के करीब 22 जिलों में कम या ज्यादा मात्रा में निवासरत है किन्तु सघन आबादी चंबल एवं ग्वालियर संभाग तथा भोपाल संभाग में ही है। जहाँ पर सहरिया लोग घास–फूस, बाँस और लकड़ी से टटिया एवं मिट्टी की दीवारों से अपनी झोपड़ी बनाकर रहते है। इनकी बसाहट को सहराना कहा जाता है, जिसका मुखिया पटेल होता है। यह कोलरियन परिवार की अत्यंत पिछड़ी जनजाति है। ये अपने को भीलों का छोटा भाई कहते है। सहरिया लोग गरीबी एवं दयनीय दशा के कारण सिर्फ पेट भरने लायक ही साधन जुटा पाते है। महुआ एवं वनों से प्राप्त कंदमूल एवं कभी–कभी मेहनत, मजदूरी कर या कृषि कार्य से प्राप्त अनाज से अपना जीवन यापन करते है। ज्वार इनका मुख्य खाद्य आहार है। सहरिया जनजाति के लोग भगवान पर पूर्ण आस्था और विश्वास रखते है। भगवान का नाम हर समय स्मरण किया जाता है, हनुमान, शीतलामाता, शारदामाई, हीरामन, नहारदेव, भैंरव देव आदि देवी–देवता है। कुछ प्रमुख देवों में ठाकुर देव, रामदेव, नागदेव, गंगाजी, राम, गणेश सूर्य, चंद्रमा का भी पूजन करते है।

सहरिया समाज में परिवार का स्वरूप पितृ सत्तात्मक होता है। इनके यहां मातृसत्तात्मक वंश के परिवार कम ही देखने को मिलते है। जनजाति में एकाकी परिवार व्यवस्था एवं संयुक्त परिवार व्यवस्था विद्यमान है। जिसमें परिवार का मुखिया पिता या बडा भाई होता है। यह अपने परिवार की दैनिक आवश्कताओं की पूर्ति के लिए टोकरी निमार्ण, हस्तकार्य एवं मजदूरी करते है यह आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से बहुत ही पिछड़े हुए है जिस कारण इनका शैक्षिक विकास भी बहुत कम हो पाया हैं।

पारिवारिक वातावरण :–

बालक की शिक्षा में परिवार का महत्वपूर्ण स्थान है। बालक परिवार में ही जन्म लेता है, परिवार में ही बोलना सीखता है। शिक्षा का प्रारंभ परिवार से ही होता है। इस कारण परिवार को बालक की प्रथम पाठशाला कहा गया है। परिवार में बालक सबसे अधिक माँ के सम्पर्क में रहता है। इसलिये माँ को बालक की प्रथम शिक्षक कहा गया है। परिवार के अन्य सदस्यों के आचरण एवं व्यवहार का भी बालक पर प्रभाव पड़ता है। वस्तुतः बालक वैसा ही बनता है जैसा उसका पारिवारिक वातावरण होता है।

परिवार मानव समाज की महत्वपूर्ण उपलब्धि है जिसमें बच्चें का जन्म होता है और उसके विकास की नींव रखी जाती है। परिवार बच्चे की सर्वप्रथम शिक्षण संस्था होती है तथा माँ बच्चें की सर्वप्रथम शिक्षिका होती है। परिवार में रह कर ही बच्चा अनुकरण के द्वारा सुनना–बोलना, चलना–फिरना सीखता है साथ ही उसका शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक एवं नैतिक विकास भी परिवार में रहकर प्रारम्भ हो जाता है।

पैस्टालॉजी के शब्दों में – ''परिवार प्रेम और स्नेह का केन्द्र है, शिक्षा का सर्वोत्तम स्थान है और बच्चे का सर्वप्रथम विद्यालय है।''

फ्रोबेल एवं **मान्टेसरी** ने भी बच्चों की शिक्षा में परिवार के महत्व को स्वीकार किया है। भारतीय विद्वानों में महात्मा गाँधी, गीजू भाई बधेका आदि ने बच्चे के विकास में परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार किया है।

स्पष्ट है कि बालक के व्यक्तित्व निर्माण में परिवार की भूमिका सर्वप्रमुख है, यदि परिवार का वातावरण स्वस्थ्य, सहानुभूतिपूर्ण और सहयोग पूर्ण होता है तो बच्चें के व्यक्तित्व का विकास सकारात्मक दिशा में होता है।

शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक उपलब्धि से अभिप्राय छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान, बोध, कौशल, अनुप्रयोग आदि योग्यताओं की मात्रात्मक अभिव्यक्ति से है।

शैक्षिक उपलब्धि प्रायः उपाधि या सफलता के स्तर या शैक्षिक कार्य में प्राप्त निपुणता को लक्षित करता है। किसी व्यक्ति के कौशल की सामाजिक स्वीकृति, उसके ज्ञान का व्यास और गहराई या सीखने की किसी विशेष क्षेत्र में उसकी निपुणता ही उसकी उपलब्धि की सीमा का सूचक है।

गुप्ता (2007) के शब्दों में, शैक्षिक उपलब्धि से अभिप्राय छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान, बोध, कौशल, अनुप्रयोग आदि योग्यताओं की मात्रात्मक अभिव्यक्ति से है। शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के द्वारा छात्रगण अपनी बौद्धिक योग्यताओं का विकास करते हैं। छात्रों ने किस सीमा तक अपनी बौद्धिक योग्यताओं का विकास किया है, यही उनकी शैक्षिक उपलब्धि का सूचक होता है।

अध्ययन की रुपरेखा

प्रतिदर्शन विधि

इस शोध में प्रतिदर्श चयन के लिए **असंभाव्य प्रतिदर्शन** में **उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन विधि** का चयन प्रतिदर्श चयन के लिए किया गया है।

उपकरण का परिचय :–

इस शोध में आकड़ों के संग्रह के लिए मानकीकृत परीक्षण गृह वातावरण मापनी का उपयोग किया गया है। वर्तमान में यह गृह वातावरण मापने के लिय अत्यंत प्रासंगिक मापनी है। नाम – गृह वातावरण मापनी निर्माता – रीना शर्मा

उद्देश्य

शोधकार्य हेतु चयन की गई समस्या के लिए निम्नलिखित उद्देश्य लिए गए हैं

- सहरिया जनजाति विद्यार्थियो के पारिवारिक वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पडने वाल प्रभाव का अध्ययन करना

परिकल्पना

उद्देश्यों के आधार पर शोधकर्ता द्वारा आँकड़ों के वर्णन, विवेचन और तुलना के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाओं की परिकल्पना की गई है।

- सहरिया जनजाति विद्यार्थियो के पारिवारिक वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नही पड़ता

सहरिया जनजाति के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण के आधार पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि की तुलना

चर	संख्या	शैक्षिक उपलब्धि		$t_{(2,597)}$
		माध्य	मानक विचलन	
निम्न गृह वातावरण	225	64.78	8.44	**14.549'''**
औसत गृह वातावरण	184	66.35	8.73	
उच्च गृह वातावरण	191	69.71	10.99	

'''0.001 विश्वास स्तर पर सार्थक

समान सुपरस्क्रिप्ट = कोई सार्थक अंतर नहीं; असमान सुपरस्क्रिप्ट = सार्थक अंतर

सहरिया जनजाति के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण के आधार पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि की तुलना हेतु **वन वे एनोवा** परीक्षण किया गया। आँकड़ों से यह स्पष्ट है कि सहरिया जनजाति के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण के आधार पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर ($t_{(2,597)}$ = 14.549;**च ढ** .001) है। यह जानने के लिए कि यह अंतर किन समूहों के बीच है, टकीज बी पोस्ट हॉक टेस्ट का प्रयोग किया गया। पोस्ट हॉक टेस्ट के परिणाम प्रदर्शित करते हैं कि सहरिया विद्यार्थी जिनका पारिवारिक वातावरण उच्च स्तर (ड = 69.71,ैक = 10.99) का है उनकी शैक्षिक उपलब्धि औसत पारिवारिक वातावरण (ड = 66.35,ैक = 8.73) तथा निम्न स्तर के पारिवारिक वातावरण (ड = 64.78,ैक = 8.44) वाले विद्यार्थियों की तुलना में अधिक है। जबकि औसत पारिवारिक वातावरण (ड =66.35,ैक = 8.73) तथा निम्न पारिवारिक वातावरण (ड = 64.78,ैक = 8.44) वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

सहरिया विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि

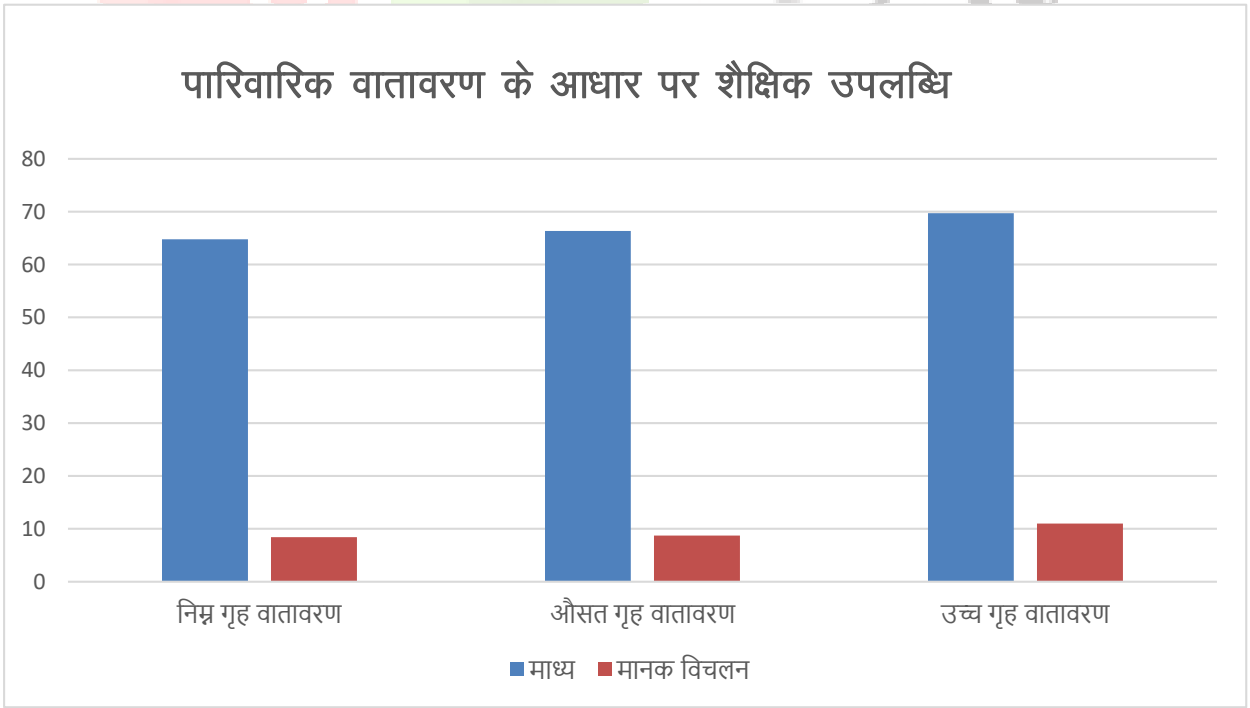

परिणामों के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि सहरिया जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पारिवारिक वातावरण में प्रधान आयाम तथा पारिवारिक वातावरण के स्तर का प्रभाव पड़ता है। **अतः निर्मित परिकल्पना " सहरिया जनजाति विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नही पड़ता" पूर्णतः अस्वीकृत सिद्ध होती है, और वैकल्पिक परिकल्पना "सहरिया जनजाति विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है" स्वीकृत की जाती है।**

निष्कर्ष

सहरिया जनजाति के सभी विद्यार्थियों के आँकड़ों के आंकलन से पाया गया कि जिनका पारिवारिक वातावरण स्वीकृति का है उनकी शैक्षणिक उपलब्धि सर्वाधिक है। इसके बाद छूट पारिवारिक वातावरण, अतिसंरक्षण पारिवारिक वातावरण एवं प्रभुत्वशाली पारिवारिक वातावरण शैक्षणिक उपलब्धि के लिए सहायक है जबकि तिरस्कार पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि न्यूनतम है। प्रस्तुत परिणाम इन आयामों की परिकल्पना के अनुरूप हैं। क्योंकि स्वीकृति का वातावरण बालोन्मुखी है और विद्यार्थी के चहुमुंखी विकास में सहायक है जबकि तिरस्कारपूर्ण वातावरण विद्यार्थी के लिए सशर्त संभावनाओं को प्रस्तुत करता और बच्चे के पास एक व्यक्ति के रूप में कोई अधिकार नहीं प्रदान करता है। साथ ही यह पाया गया कि उच्च पारिवारिक वातावरण वाले सहरिया जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सर्वाधिक है, तत्पश्चात औसत पारिवारिक वातावरण वाले सहरिया जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उससे कम तथा निम्न पारिवारिक वातावरण सहरिया जनजाति के विद्यार्थियों शैक्षिक उपलब्धि सबसे कम है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. **शर्मा, विनोद, (2013)** सहरिया जनजाति में राजनैतिक सहभागिता के विविध प्रतिमान (चम्बल संभाग के श्योपुर जिले के विशेष संदर्भ में) शोध प्रबंध राजनीतिशास्त्र, जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर।
2. **पटेल एम. डी. (2013),** बी.एड. विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धियों का अध्ययन, सरदार बल्लभभाई पटेल विश्वविद्यालय, सूरत।
3. **गुप्ता, एम.एल. एवं शर्मा, डी.डी. (2012),**"समाजशास्त्र" साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
4. **सिंह, सुमन एवं भाटिया, गुंजन (2012)** स्टडी ऑफ सेल्फ –एस्टीम ऑफ सेकन्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू देयर फैमिली इनवायरन्मेंट विषय पर शोध कार्य, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र।
5. **रंजन नायक, (2012)** ने उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अध्ययन, उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर।
6. **मिश्रा, बी, (2011),** ''अनुसूचित जाति व गैर अनुसूचित जाति के शैक्षिक अनुकूलन, उपलब्धि एवं सामाजिक आकाक्षां का अध्ययन'' अप्रकाशित पी–एच0डी0, थीसिस शिक्षा शास्त्र विभाग डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (म.प्र.)
7. **सैफी सैफुल्लाह, मेहमूद तारिक (2011)** ''सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं पारिवारिक वातावरण का विद्यार्थियों की उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, गुजरात।
8. **चौधरी सुजीत कुमार (अप्रैल 2011),** ''दलित शिक्षा का समाजशास्त्रीय अवलोकन'' परिपेक्ष्य, न्यूपा पृष्ठ 51–56!